अजायब बानी

मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2024

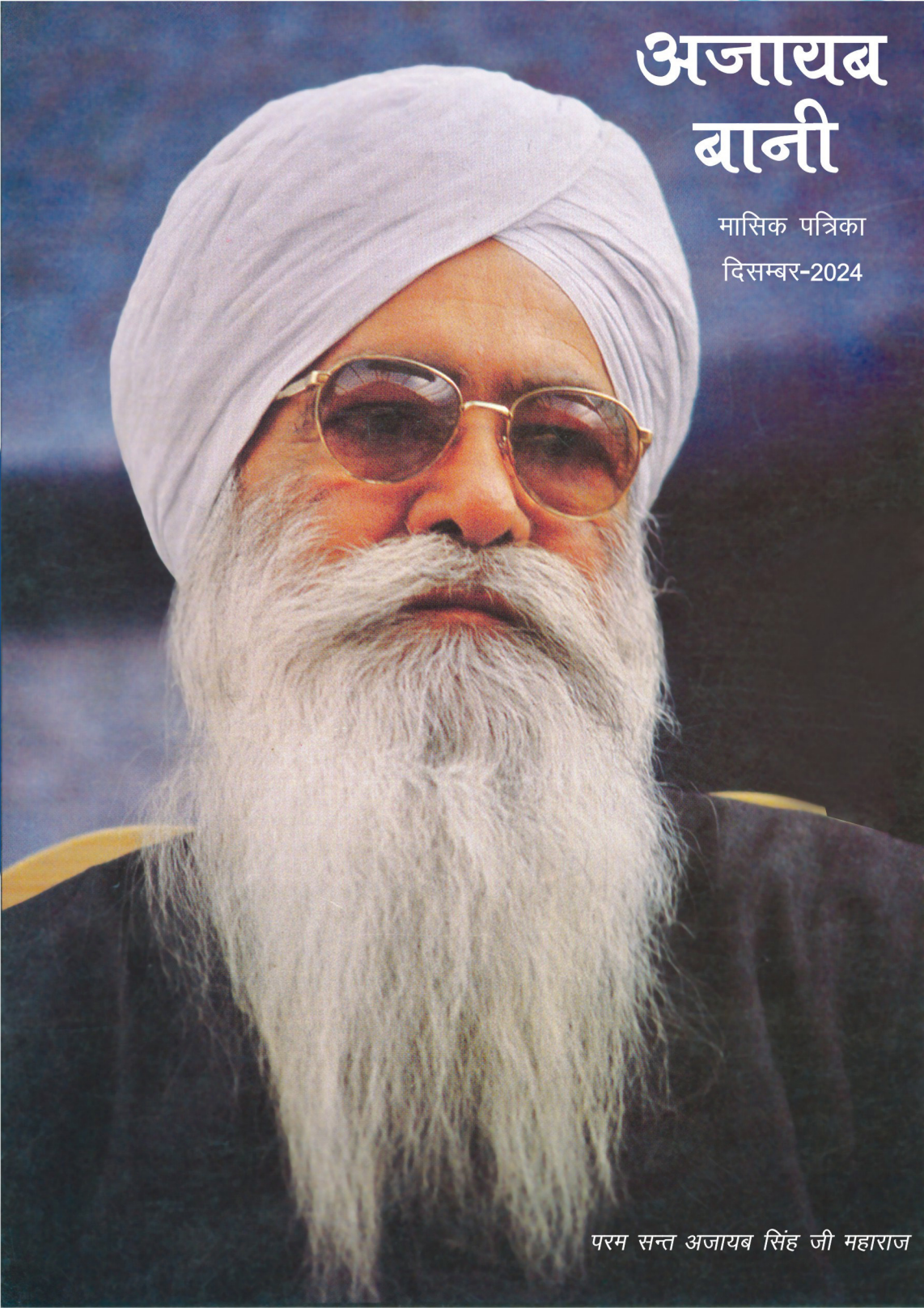

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–आठवां	दिसम्बर–2024

3 सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
हलवा–मांडा

13 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
गुरु की चार्जिंग

23 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से प्रेमियों को संदेश
प्यार

27 परम सन्त अजायाब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया संदेश
प्यार, भरोसा और श्रद्धा

32 सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 273 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

किरपाल

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हलवा-मांडा

02 फरवरी 1988 | गुरु अर्जुनदेव जी की बानी | 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

राज मिलक जोबन गृह सोभा रूपवंतु जुोआनी।।

गुरु अमरदास जी महाराज के शब्दों में गुरु पर प्यार, भरोसा और बहुत वैराग मिलता है। साथ ही दुनिया, दुनिया के सामान और बड़ी से बड़ी चीज़ को तुच्छ समझना भी मिलता है। वे उस समय दुनिया में प्रचलित बहुत से रीति-रिवाज कर चुके थे। उन्हें बुढ़ापे में गुरुमत में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हमें सन्त-महात्माओं की हिस्ट्री पढ़ने से पता चलता है कि वे किस तरह अपनी जिंदगी में अपने गुरु के आगे ऋणी बनकर रहे। वे अपने गुरु को रब-रहीम, परमात्मा सब कुछ मानकर चले। जब गुरु अंगद देव जी ने गुरु अमरदास जी महाराज को संगत की अगुवाई करने का हुक्म दिया तो उस समय जो मुश्किलें आने वाली थी, उन्होंने उनका जिक्र किया जिनमें से एक यह भी थी कि लंगर कैसे चलेगा और लंगर के लिए क्या हुक्म है?

गुरु अंगद देव जी बड़े दयालु थे उन्होंने कहा, ''प्यारेया, जहाँ गुरु है वहाँ सब कुछ है गुरु सब कुछ कर लेते हैं, वे करने योग्य होते हैं तुम शाम को बर्तन धोकर उल्टे करके रख देना तुम्हें सुबह वे भरे हुए मिलेंगे।'' उन्होंने अपने भरोसे के मुताबिक यह हुक्म दिया हुआ था कि जो भी मुझसे मिलने आए वह पहले लंगर करे, बाद में आकर मुझसे बातचीत करे।

उस वक्त हिन्दुस्तान के बादशाह अकबर के ख्याल काफी अच्छे थे। अकबर गुरु अमरदास जी महाराज के दर्शनों के लिए आया। जब वह गुरु अमरदास जी महाराज के पास गया तो बहुत सारा धन-पदार्थ लेकर गया था। अकबर नौजवान राजा था, उसे अहंकार था कि मैं हिन्दुस्तान का

शहँशाह हूँ और वे जो भी मांगेंगे मैं उन्हें देने के लिए तैयार हो जाऊंगा लेकिन उसने भी पंक्ति में बैठकर लंगर किया।

इसी तरह जब बाबा जयमल सिंह जी ने महाराज सावन सिंह जी को हुक्म दिया कि तुमने संगत की अगुवाई करनी है तो महाराज सावन सिंह जी ने भी अपनी इस कमजोरी को उनके आगे ज़ाहिर किया। बाबा जयमल सिंह जी बहुत दयावान थे, उन्होंने कहा, ''देख भई प्यारेया, तुम्हें इसका क्या फिक्र है? राजा–महाराजा तुम्हारे पास आएंगे, गुरु उनमें बैठकर सारा काम खुद ही चला लेंगे।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अमीर लोग लंगर में सेवा दे जाते हैं और गरीब लोग खा जाते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी को बहुत से प्रेमी सेवा के लिए पूछते रहे। वे कहा करते थे कि भजन करके लाएँ यही मेरी सेवा है।

जब महाराज कृपाल ने महाराज सावन सिंह जी के आगे इस तरह की विनती की तो महाराज सावन ने कहा, ''जब बाबा जी आगरा से आए थे तो वहाँ से धन–पदार्थ नहीं लाए थे। जहां वे बैठे वहाँ लंगर भी चले, मकान भी बने और सब कुछ ही हुआ।'' कृपाल सिंह, जहां सतगुरु हैं वहाँ सब कुछ ही है। उन्हें खुद ही जरूरतों का पता होता है इसलिए हमारे सतगुरु महाराज कृपाल यही कहते रहे, ''सन्त देने के लिए आते हैं, सवाल तो लेने वाले का है कि उनसे कोई कितनी दया प्राप्त कर सकता है।''

यही हालत इस गरीब अजायब की थी, हुजूर कृपाल ने अपनी दया–दृष्टि डालकर यही कहा, ''लंगर मेरा है, तुम्हें फिक्र करने की जरूरत नहीं।'' आप सबको पता है कि मैं बाहर कई टूर कर चुका हूँ, सन्त बानी मैगज़ीन भी छपती है। मेरे गुरुदेव ने कभी यह मौका नहीं आने दिया कि मैंने मैगज़ीन में छपवाया हो या पश्चिम के लोगों से यह कहा हो कि लंगर नहीं चलता आप कोई सेवा दें। यह सब उस दयालु गुरु की दया है।

मैं बंगलौर भी गया और मुम्बई में भी सतसंग दिए हैं। वहाँ बड़े–बड़े लंगर चलते हैं। जो प्रेमी वहाँ इंतजाम करते हैं, उन्हें पता ही है कि मैंने कभी यह जिक्र या संशय नहीं किया कि यह लंगर कैसे चलेगा, आप सेवा लें। कई लोगों ने मुझसे पूछा लेकिन मैंने कहा कि यह तो गुरु जाने, सब उनकी दया है। कई लोगों ने यहाँ 16 पी.एस. में भी पूछा, मैं सदा यही कहता हूँ कि यह लंगर अजायब का नहीं है मेरे गुरुदेव परमात्मा कृपाल का है, जिस दिन लंगर अजायब का हुआ उस दिन जो मर्जी करना।

प्यारेयो, सन्तों के इस राज़ को सन्त ही समझ सकते हैं या जो अंदर जाते हैं वे समझ सकते हैं। तुलसी साहब और सब सन्तों ने यही कहा, ''अगर कोई यह कहे कि मैंने सन्त का भेद प्राप्त कर लिया है या सन्त को समझ लिया है तो मैं कानों को हाथ लगाता हूँ। सन्त परमात्मा से मिले हुए और कुल–मालिक होते हुए भी संसार में एक मामूली इंसान की तरह साधारण जिंदगी जीते हैं।''

गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि राज, यौवन, रूप, शोभा और धन–पदार्थ मालिक की दरगाह में किसी काम नहीं आते, ये हमने यहीं छोड़कर चले जाना है। धनी–राजा लोग मान करते हैं कि मैं इस धरती का मालिक हूँ, मेरे पास इतना धन–पदार्थ है, मेरी इतनी फौजें हैं इनमें से किसी ने भी दरगाह में जाकर आपकी मदद नहीं करनी, किसी ने भी आपके काम नहीं आना। यहाँ तक कि यह शरीर जिसका आप इतना मान करते हैं इसने भी आपका साथ नहीं देना आखिर इसे भी यहीं छोड़कर चले जाना है।

सन्त यह नहीं कहते कि आपको जो पदार्थ मिले हैं आप इन्हें फैंक दें या इनसे काम न लें अगर परमात्मा ने आपको इनाम में पदार्थ दिए हैं तो आप इनसे काम लें, इनसे सेवा लें। ऐसा न हो कि इनसे सेवा लेने की बजाए आप इनके ही सेवादार बन जाएँ। कबीर साहब कहते हैंः

माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ।
इसकी सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाई।।

बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी।।

जिस समय गुरु साहब ने यह बानी लिखी थी, उस वक़्त हिन्दुस्तान में हाथी–घोड़े और सोने से सजाए हुए रथ थे, उन रथों को घोड़े खींचते थे। आम सफर करने के लिए हिन्दुस्तान में यही चीज़ें प्रचलित थीं। जिसके पास ऐसे साधन ज्यादा से ज्यादा थे, वही राजा कहलवाता था।

आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी।।

आप कहते हैं कि दरगाह में ये चीज़ें काम नहीं आती सिर्फ हम अभिमान ही करते हैं कि हमारे पास इतने लाल हैं। हिन्दुस्तान में अकबर के बाद जहांगीर हुआ और जहांगीर के बाद शाहजहाँ हुआ। शाहजहाँ हिन्दुस्तान में हीरों का बहुत पारखी था, उसके पास संसार में सबसे ज्यादा हीरे थे। दुनिया का मशहूर कोहिनूर हीरा भी उसके पास था।

प्यारेयो, हम इस संसार में भी बहुत से कर्म करके भोग जाते हैं। शाहजहाँ के लड़के औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को उसके जीवनकाल में ही कैद करके रखा। उसे इतनी सख्त सजा दी कि पीने के लिए पूरा पानी भी नहीं देता था। आप सोचकर देखें कि हिन्दुस्तान का मालिक होकर, इतने बड़े हीरे रखकर भी आखिर उसने कैद में ही शरीर छोड़ा।

हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू महाराज कृपाल सिंह जी के पास आया–जाया करते थे, उनका आपस में अच्छा प्यार था। एक दिन महाराज कृपाल बातों–बातों में नाम और परमात्मा के बारे में जानकारी देने लगे तो पंडित नेहरू ने पूरी बात भी नहीं सुनी और बीच में ही कहने लगे, ''देखो जी, आपका कहना अपनी जगह ठीक है लेकिन मैं हिन्दुस्तान का प्रधानमंत्री हूँ, मेरे पास भक्ति करने का समय कहाँ है अगर मैं ही भक्ति में लग गया तो हिन्दुस्तान का काम कैसे चलेगा, इसे कौन संभालेगा?'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''देख भई पंडित जी, हिन्दुस्तान तो यहीं रहना है, मैं और आप शायद यहाँ न रहें। हम जो अमल करेंगे, वही हमारे साथ जाएंगे।''

कुछ ही दिनों बाद महाराज जी देहरादून में थे, वहां रेडियो पर बताया गया कि पंडित जवाहर लाल नेहरू संसार में नहीं रहे, उनकी जगह कार्यवाहक प्रधानमंत्री गुलजारी लाल नन्दा को बना दिया गया है। महाराज जी पंडित नेहरू के मित्र थे, आखिर वे दिल्ली आए। हिन्दुस्तान में उनकी अर्थी उठने से पहले ही किसी और को प्रधानमंत्री बना दिया।

काहे एक बिना चितु लाईऐ। काहे एक बिना चितु लाईऐ।
ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि प्यारेयो, आपने उस मालिक परमात्मा के बगैर मन को दुनिया के साथ क्यों लगाया हुआ है? गुरु आपको जो सिमरन बताते हैं, शब्द का भेद देते हैं, आप उठते–बैठते, सोते–जागते गुरु की तरफ ध्यान दें और उनका दिया हुआ सिमरन करें।

जिन्हें हम दिन में याद करते हैं, रात में उनके ही उल्ट–पुल्ट सपने आते हैं, बार–बार उनकी याद आती है। अन्त समय में भी उन्हीं लोगों की याद आती है, वे पदार्थ ही आँखों के आगे घूमते हैं। इसी तरह अगर हम सन्तों का दिया हुआ सिमरन करेंगे, उनकी याद दिल में बैठाएंगे तो वे हमें सोते हुए भी मिलेंगे और जागते हुए भी मिलेंगे। आखिरी समय में हमारा ख्याल उस तरफ अपने आप ही चला जाएगा। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप भजन–सिमरन नहीं कर सकते तो सन्तों से प्यार ही कर लें क्योंकि आपका मन और आपकी आत्मा प्यार में बँधी हुई सन्तों के पास ही जाएगी। सन्त परमात्मा के पास से आए हैं और वे हमें परमात्मा के पास ही ले जाएंगे।''

महा बचित्र सुँदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े।

आप कहते हैं कि बेशक आपने कितने भी सुंदर और अच्छे मकान बना लिए हैं, उनमें हीरे भी जड़ दिए हैं। बेशक रणभूमि में जाकर कितनों

को ही जीत लिया है, कितने ही अखाड़े खड़े कर लिए हैं लेकिन मालिक के दरबार में इनकी कोई शान नहीं और ऐसे लोगों को मालिक के दरबार में आदर नहीं मिलता।

हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े।।

आप कहते हैं कि दुनिया में यही है कि मैं उसे बंदी बना लूँगा, मैं तगड़ा हूँ, मैं उसका कत्ल कर दूंगा। मैं उसके मुल्क पर कब्जा कर लूँगा। देख प्यारेया, जिस तरह इसमें से चार दिन पहले वाले ने **हलवा–मांडा** खा लिया है इसी तरह तुमने भी **हलवा–मांडा** खाकर चले जाना है।

बाबा बिशन दास जी एक बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे कि एक महात्मा थे। एक दिन महात्मा ने राजा के पास जाकर कथा की, राजा को वह कथा सुनकर वैराग हुआ। राजा ने कहा, ''महात्मा जी, आप राज करें, राज का आनंद लें, अब मैं भजन–भाव कर लेता हूँ।'' महात्मा ने कहा कि अच्छा भई, तुम्हारी मर्जी है, चार दिन हम आनंद ले लेते हैं।

जब दूसरे मुल्क के बादशाह को पता चला कि राजा तो वैराग धारण करके जंगल में चला गया है और आजकल एक महात्मा राज कर रहा है, जो चींटी पर पैर रखने से भी डरता है कि पाप हो जाएगा तो क्यों न उस महात्मा से राज छीन लिया जाए।

उस राजा ने हमला किया, वहाँ के प्रबन्धकों ने महात्मा को सूचना दी कि बाबा जी, दूसरे मुल्क के राजा ने हमारे ऊपर हमला कर दिया है। आप हमें हुक्म दें कि हम क्या करें? महात्मा ने कहा, ''आप खूब हलवा तैयार करें और उसे खाएं।'' कईयों ने पूछा कि बाबा जी, इसमें क्या राज़ है? महात्मा ने कहा, ''पहला राजा कौन सा इसे अपने साथ ले गया, वह भी चार दिन **हलवा–मांडा** खाकर चला गया। हम भी उस राजा से कह देंगे कि अब इस राज को तुम संभालो। हमने जो **हलवा–मांडा** खाना था, खा लिया।'' सन्त हमें प्यार से कहते हैं कि आप इस दुनिया में अकेले

आए हैं और आपने अकेले ही जाना है अगर परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हमें परमात्मा मिल जाते हैं।

आमतौर पर हम लोगों के दिल में यह ख्याल होता है कि जब किसी बड़े ओहदे पर बैठा हुआ आदमी शरीर छोड़ता है तो उसकी खातिर झंडे झुकाए जाते हैं, उसे शहीद करार दिया जाता है और हथियारों को भी उल्टे करके सलामी दी जाती है। आम लोगों के दिलों में यही ख्याल होता है कि शायद यह स्वर्गों को जाएगा। बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे सन्तों का यह तजुर्बा है कि आप अंदर जाकर देख सकते हैं कि बाहरी लोग जिनकी वहाँ तक पहुँच ही नहीं है, वे हमें किस तरह स्वर्गों में भेज देंगे, यह हमारे मन का एक भ्रम हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मरना भला परदेस का, जहां ना कोई माई बाप।
ना रोए ना पीटिए, ना को भए उदास।।

आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े।।

आप कहते हैं कि बेशक वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसके पास कितने ही दुनिया के साधन और आर्मी क्यों न हों लेकिन जब मालिक का हुक्म आ जाता है तो एक सेकंड ही लगता है, वह संसार छोड़कर खाली हाथ चला जाता है।

करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै।।

अब आप प्यार से उन लोगों का जिक्र करते हैं जो यह कहते हैं कि जिस तरह आजकल हमारे समाजों के गुरु या धर्मगुरु रीति–रिवाज करते हैं अगर इस युक्ति से कोई कर्म–धर्म किया जाए तो वही परवान है लेकिन गुरु साहब अपना तजुर्बा बताते हैं कि बेशक वे कितनी ही युक्तियों के साथ कर्म–धर्म क्यों न करें अगर उसने भगवान कि भक्ति नहीं की, अपने जीवनकाल में परमात्मा को प्राप्त नहीं किया तो परमात्मा के दरबार में इसका मूल्य कौड़ी भी नहीं है। गुरु अर्जुन देव जी तो यहाँ तक कहते हैं:

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै।

उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै।।

आप कहते हैं कि दुनिया को उपदेश करता है कि इस तरह ख्याल को एकाग्र करने से शांति मिलती है लेकिन वह खुद नहीं करता और न ही उसने जिंदगी में किया होता है। उसने अपने अंदर 'शब्द' प्रकट नहीं किया होता, उसकी ऐसी हालत है:

अवर उपदेसै आपि न करै, आवत जावत जनमै मरै।

मैंने एक शब्द में बताया है:

रंगरलियां माणदेयां पड़दे नां खुलदे, करनी पवे कमाई।

प्यारेयो, शब्द को प्रकट करने के लिए और गुरु को अपने ऊपर मेहरबान करने के लिए दुनिया की कोई भी कुर्बानी बड़ी नहीं होती।

नाँगा आइआ नाँगो जासी जिउ हसती खाकु छानै।
संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा।।

आप कहते हैं कि इस संसार में नंगा आया था और नंगा ही जाएगा। जो लोगों को उपदेश करता है कि आप कमाई करें और वह खुद कमाई नहीं करता, उसका कहना इस तरह है जैसे हाथी को नहला दें लेकिन हाथी फिर अपने ऊपर राख डाल लेता है, यही हालत उस आदमी की है।

महाराज सावन सिंह जी ऐसे आदमियों के बारे में मिसाल देकर कहा करते थे कि जिस तरह अंधे आदमी राख उड़ाते हैं, उन्हें दिखाई नहीं देता और वे खुद उस तरफ खड़े हैं जहां राख आकर गिर रही है। यही हालत उन लोगों की है जो अंदर नहीं जाते और न ही उन्हें पता है कि अंदर किस तरह जाना है। न सारी जिंदगी गुरु से प्यार किया न गुरु पर श्रद्धा रखी और न ही गुरु के कहे अनुसार भजन–अभ्यास किया और अब वे

दुनिया के ठेकेदार बन गए हैं कि आओ, हम आपको मुक्त कर देते हैं। वे अपने ऊपर ही राख डाल रहे हैं।

आखिर जब उसके आगे यह सवाल करते हैं कि प्यारेया, तुम्हारी क्या राय हैं? क्या तुमने कभी यह छह फुट की किताब पढ़ी है? कभी अंदर जाकर देखा है कि किस तरह परमात्मा अंदर तराजू लेकर बैठे हैं और सच–झूठ का निर्णय कर रहे हैं? काल किसी को माफ नहीं करता, कहीं किसी के दिल में ख्याल हो कि मेरे ज्यादा चेले हैं तो शायद मैं मुक्त हो जाऊंगा, यह उनकी भूल है।

मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा।।

आप कहते हैं कि ऐसे लोग खुद डूब जाते हैं और दूसरे लोगों को भी डूबा देते हैं। वे कभी किसी ग्रंथ की मिसाल देते हैं तो कभी किसी ग्रंथ की मिसाल देते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

लाया साखि बनाय कर इत उत अच्छर काट।
कह कबीर कब लग जिए जूठी पत्तल चाट।।

गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा।।

गुरु साहब ने हमें बड़ी अच्छी–अच्छी मिसालें देकर इस शब्द में समझाया और आखिर में अपना फैसला एक ही बात पर खत्म करते हैं कि हमें सतगुरु मिले, उन्होंने नाम का भेद दिया, हमारे ऊपर दया की।

हमारे ऊंचे कर्म थे कि हमने उनका हुक्म मानकर 'शब्द–नाम' की कमाई की। सतगुरु ने दरगाह में हमारा फैसला कर दिया और परमात्मा के आगे खड़े कर दिया कि यह आपका जीव है, भूल गया था, आपसे माफी मांगने के लिए आया है। यह गुरु की बड़ाई है, गुरु के नाम ने ही हमारे साथ जाना है, बाकी दुनिया का जो कुछ सामान हम इकट्ठा कर रहे हैं, वह यहाँ से लिया है और यहीं छोड़ जाना है। हम सुखमनी साहब में पढ़ते हैं:

हरि धन के भरि लेहु भंडार, नानक गुर पूरे नमसकार। ✲✲✲

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु की चार्जिंग

30 अक्टूबर 1985 — 16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

एक प्रेमी: *हमें यह बताया गया है कि सिमरन सभी मंत्रों से बढ़कर है अप्रैल 1985 की सन्तबानी मैगजीन के पन्ना नम्बर 26 पर यह छपा है जिसमें आपने कहा है कि जिसे नामदान दिया जाता है उसके पीछे गुरु की चार्जिंग काम करती है। आप कृपा करके हमें यह बताएंगे कि यह चार्जिंग किस तरह और कब होती है और यह किस तरह कायम रखी जाती है। क्या यह चार्जिंग एक बार में ही हो जाती है या सिमरन को कारगर रखने के लिए उसे दोबारा चार्ज किया जाता है?*

ऐतिहासिक रूप में कबीर साहब से पहले कौन से महात्मा थे जिन्होंने सिमरन को अपनाया। उस महात्मा को किनसे सिमरन प्राप्त हुआ? अभी सिमरन का जो मौजूदा बाहरी रूप है, क्या इससे पहले इसका कोई और रूप था जो बदलकर इस रूप में आ गया। अगर ऐसा है तो क्या आगे जाकर इसमें कोई तबदीली होने की संभावना है?

बाबा जी: हां भई, सवाल तो सबने सुन ही लिया है, अब गौर से जवाब सुनें। यह जवाब हर एक के लिए फायदेमंद है इसे समझने की कोशिश करें। सब सन्त यही बताते आए हैं महाराज सावन सिंह जी ने भी बहुत खोलकर बताया है। संसार में पहले सन्त कबीर साहब थे जो चारों युगों में आए, अनुराग सागर में इस बारे में बहुत खोलकर बताया गया है। सतयुग में कबीर साहब का नाम सतसुकृत था, त्रेता में मुनिन्द्र, द्वापर में करुणामय और कलयुग में उनका नाम कबीर पड़ा।

पहले तीनों युगों में सेवक जब तक सिमरन नहीं पका लेता था तब तक उसे 'शब्द' का रास्ता नहीं बताया जाता था। कलयुग में कबीर साहब

ने खास दया करके सिमरन और धुन इकट्ठे देने शुरू कर दिए। मंडल कभी नहीं बदलते, सिमरन कभी नहीं बदलता और सचखण्ड भी वही है। आपको बताया जाता है कि जो पांच मंडल रास्ते में आते हैं, उनमें जो सामान है वह भी वही है, वे तब्दील नहीं होते। फर्क इतना ही होता है कि जब प्रलय आती है तो ब्रह्म तक पहुंची हुई आत्मा और यह सारे मंडल ढह जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं फिर दोबारा रचना होती है। जब महाप्रलय होती है तो भंवर गुफा तक पहुंची हुई आत्माएं और वहां तक के सारे मंडल भी समाप्त हो जाते हैं, दोबारा फिर इनकी रचना होती है।

सचखण्ड ही ऐसा देश है जहां न प्रलय होती है न महाप्रलय होती है। सचखण्ड पहुंची हुई आत्माएं दोबारा इस संसार में नहीं आती। सिर्फ सन्त ही परमात्मा के हुक्म से जीवों को लेने के लिए आते हैं, इसमें उनकी अपनी कोई मर्जी नहीं होती, वे हमारी तरह कैदी बनकर नहीं आते।

पिछले युगों में जब सन्त सेवक को सिमरन देते थे, धुन नहीं पकड़ाते थे तो कई बार ऐसा होता था कि गुरु शरीर छोड़ जाता था या सेवक शरीर छोड़ जाता था और सेवक का काम अधूरा रह जाता था मुक्ति धुनात्मक नाम में है और इस मुश्किल को दूर करने के लिए कबीर साहब ने सेवकों को एक ही टाइम पर पूरा नाम देना शुरू कर दिया ताकि कोई भी जीव बीच में लटकता न रहे।

मैंने आपको बताया था कि सिमरन फैले हुए ख्यालों को इकट्ठा करके आंखों के पीछे आना और नौं द्वार खाली करने हैं। तारा मंडल, सूरज मंडल, चंद्रमा मंडल से ऊपर गुरु स्वरूप तक जाना है। सिमरन हमें इससे आगे लेकर नहीं जाता। जब हमारी आत्मा ऊपर पहुंचती है तो शब्द हमारी आत्मा को ऊपर खींच लेता है। गुरु साथ होकर हर मंडल को पार करवाते हैं। 'शब्द' के जरिए ही आत्मा एक मंडल से दूसरे को पार करती है।

अब आप **गुरु की चार्जिंग** की तरफ आएं। बड़ा दिलचस्प सवाल है कि चार्जिंग कब की जाती है अगर यह चार्जिंग खत्म हो जाए तो क्या

दोबारा चार्जिंग की जाती है? गुरु किस समय दया करते हैं? अब आप इस तरफ गौर करें। प्यारेयो, पहली बात तो यह है कि ये महान आत्माएं बनी बनाई ही परमात्मा की तरफ से आती हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी हिस्ट्री में लिखते हैं कि मैंने अपने पिछले जन्म में बहुत भारी तप किया, परमात्मा में मिल गया, मैं दो से एक हो गया। जब दुनिया पत्थर पूजक हो गई थी, कोई परमात्मा की भक्ति नहीं कर रहा था, जितने भी आए सबने अपना ही नाम जपवाया, किसी ने भगवान का नाम नहीं जपवाया। तब परमात्मा ने मुझसे कहा, ''मैं तुझे अपना प्यारा बेटा बनाकर संसार में भेज रहा हूं।'' मेरा इस संसार में आने के लिए दिल तो नहीं करता था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका। मैंने परमात्मा से विनती की कि हे परमात्मा, मैं आपको छोड़कर किसी देवी–देवता से कोई ताकत हासिल न करूं चाहे वे कितने ही रुतबें वाले हों। मैं जो वर चाहूँ, आपसे ही प्राप्त करूं। मेरा परिवार मेरी संगत है, मेरी संगत सुखी बसे, नाम के साथ जुड़ी रहे। मेरी आपके आगे यही विनती है, यही मांग है।

ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर निआइ।
पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ।।

मैंने हाथ जोड़कर परमात्मा के आगे नमस्कार किया और कहा, ''यह रास्ता, यह संप्रदाय, आपके नाम का प्रवाह तब ही चलेगा जब आप मदद करेंगे।'' सोचकर देख लें, मालिक के प्यारों का परमात्मा के साथ क्या रिश्ता होता है? वे परमात्मा में समाए होते हैं अगर पिता अपनी ड्यूटी समझता है तो उसे पता होता है कि मेरे बेटे को किस चीज की जरूरत है, वह किस चीज का शौकीन है, उसकी क्या मांग है? पिता बिना मांगे ही देता रहता है। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

पिता कृपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि माँगै सो देना।

परमात्मा दयालु हैं, कृपा करते हैं। परमात्मा ने यह आज्ञा दे दी कि तुझे जिस चीज़ की जरूरत होगी, वह तुझे मिलेगी।

आज सवारियों के साधन बदल गए हैं, हर जगह जीपें, कारें और बसें है लेकिन मैं उस जमाने की बात कर रहा हूं तब ये साधन नहीं थे। उस समय हिन्दुस्तान में घोड़े की सवारी ज्यादा से ज्यादा मशहूर थी। पंजाब में श्री मुक्तसर साहिब एक तीर्थ है। वहां हर साल मेला लगता है, जहां घोड़ों की दौड़ होती है। घोड़े वालों को बहुत इनाम मिलता है। मैं और मेरे पिता वहाँ गए। जो घोड़ा सबसे अव्वल आया, मेरे पिता ने उस घोड़े वाले जिसका नाम इन्द्र सिंह था जो तरखाण वाला गांव से था, से कहा, ''इस घोड़े का क्या मूल्य लेना है?'' घोड़े वाले ने कहा, ''सरदार जी! क्या आप इस घोड़े का मूल्य चुका देंगे?'' घोड़े वाले ने जो मूल्य बताया, मेरे पिता ने उसे वही दे दिया।

अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मेरे पिता ने यह ड्यूटी समझी कि मेरा बेटा इस घोड़े पर बैठा हुआ अच्छा लगेगा। कई बार जब वे खुश होते तो मुझे घोड़े पर बिठाकर आप खड़े हो जाते और कहते, ''इसे चला भई।'' मेरा कहने का भाव इतना ही है कि सन्तों का परमात्मा के साथ बाप और बेटे का रिश्ता होता है जो बहुत प्यारा और अटूट होता है। सन्तों को जब भी किसी चीज की जरूरत होती है तो परमात्मा उन्हें बिना मांगे ही दे देते हैं और उनके सेवकों की बिना कहे ही मदद करते रहते हैं।

महाराज कृपाल को बचपन से ही बहुत अंतर्यामता थी। वे जब चौथी क्लास में पढ़ते थे, तब उन्होंने अपने टीचर से कहा, ''मेरी नानी चोला छोड़ रही हैं, मुझे छुट्टी दे दें।'' टीचर खफा होकर बोला, ''तू बड़ा औलिया कहां से आ गया है? बैठ जा।'' दो मिनट बाद उनके घर से संदेश आया कि पाल को छुट्टी दे दें, इसकी नानी इसे याद कर रही है। उसके बाद महाराज जी जितने समय वहां पढ़ते रहे, वह टीचर उनका आदर करता रहा।

इसी तरह जिनके साथ मेरा बचपन बीता है, वे आपको मेरे बचपन की बहुत सारी बातें बता देंगे। पिछले सतसंग में मेरी बड़ी बहन जिनके साथ मैंने बचपन बिताया है, वह नाम लेने आई। मुझे उनका एक लफ्ज याद है। जब मैं छोटा था तो वे मुझसे कहतीं, ''वीर, तेरा ही आसरा है।'' मैंने हंसकर कहना, ''मैं कोई भगवान हूं जो मेरा आसरा है?'' उन्होंने कहना, ''तेरा ही आसरा है।'' जब वह पिछली बार आई तो मैं उनसे बीस–पच्चीस साल बाद मिला, मुझे पक्का तो याद नहीं पर पच्चीस साल से कम नहीं होगा। मैंने उन्हें बिल्कुल नहीं पहचाना क्योंकि अब वह काफी आयु की थी, उनके पोते थे। उन्होंने मुझसे कहा, ''तू मुझे पहचानता है?'' जब मैंने कहा, ''बिल्कुल नहीं।'' उन्होंने कहा, ''मैं नाम लेने के लिए आई हूं, पिछली बार मैं चोरी से सतसंग सुन गई थी।'' मैं वह बात याद करके हंस पड़ा कि आप कहा करती थीं कि तेरा ही आसरा है, अब आप उस बात को पूरी करने के लिए आई हैं।

बचपन में बहुत गलतियां हो जाती हैं लेकिन ये आत्माएं जो संसार में आती हैं, बचपन से ही सचेत होती हैं, पवित्र होती हैं। इनका परमात्मा के साथ बचपन से ही लिंक होता है लेकिन ऐसी आत्माएं वक्त से पहले प्रकट नहीं होती। पहली बात तो यह है कि ये बर्तन बने बनाए ही आते हैं, दूसरी बात यह है कि ये यहां आकर हमें डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए ज्यादा से ज्यादा **चार्जिंग** फिर प्राप्त करते हैं, मेहनत करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों के अंदर कोई ताकत काम करती है लेकिन मैं उसे ताकत भी नहीं कह सकता क्योंकि ताकत का कोई भी अंदाजा लगा सकता है; वे जो कुछ हैं सो हैं। सन्तों के अंदर चार्जिंग बैटरी जितनी नहीं होती कि कभी खत्म हो गई, कभी फिर चार्ज कर ली। सन्तों का परमात्मा के साथ सीधा लिंक जुड़ा होता है।

अब सवाल का यह हिस्सा रह गया है कि सन्त कब और किस तरह दया करते हैं? यह बहुत सोचने–समझने वाली बात है। हर सतसंगी को इस तरफ भी ध्यान देना चाहिए। परमपिता कृपाल ने पच्चीस साल आम सतसंगों में कहा, ''देने वाले का क्या कसूर है? सवाल तो लेने वाले का है।'' जब वे धुर सचखण्ड से देने के लिए ही आए हैं, अब हमारा फर्ज है कि हम किस तरह और कब उस वस्तु को प्राप्त करते हैं?

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे कि जिस भंडारी के खजाने में कुछ है ही नहीं, उससे लोग क्या फायदा उठा सकते हैं? अगर परमात्मा ने उसे खजाने का भंडारी बना दिया और वह कंजूस बन जाए तो फिर भी लोग उससे फायदा नहीं उठा सकते। हमें भंडारी भी ऐसा मिले जिसके भंडार में किसी वस्तु की कमी न हो, उसका दिल भी बहुत बड़ा हो कि वह देकर ही खुश हो।

आपको भजन–सिमरन का जो रास्ता बताया गया है, यह दया प्राप्त करने का जबरदस्त साधन है, सेवक इसके जरिए जब चाहे दया प्राप्त कर सकता है। हमारा भरोसा क्यों टूटता है, हम गुरु की दया क्यों नहीं प्राप्त कर रहे? इसका एक बहुत जबरदस्त कारण है कि हम अपनी आत्मा के लिए कुछ नहीं मांग रहे होते अगर माँगते हैं तो कोई कहता है कि मेरी बीमारी दूर हो जाए, मेरी बेरोजगारी दूर हो जाए। कोई कहता है कि हम पर मुकद्दमा बना हुआ है, सन्तों ने कोई मदद नहीं की। कोई कहता है कि मेरे बेटा नहीं था, बेटा हो गया अगर बेटा हो गया फिर कहते हैं कि इसने हमें सारी रात बेचैन रखा। हमने फरियाद की थी लेकिन सन्तों ने बच्चे को चुप नहीं कराया।

आप सोचकर देखें, जिसकी दुकान पर हीरे हैं अगर आप वहां जाकर कोयले मांगे तो वह आपको कोयले कहां से देगा? बेशक आप उसे कितना भी भला–बुरा कहें या विनती करें, जब उसकी दुकान पर ये सौदा है ही

नहीं तो वह आपको कहाँ से देगा? अगर आप उससे हीरे मांगे तो वह आपको हीरे दे देगा। इसी तरह जिसकी दुकान पर कोयले हैं अगर आप उससे हीरे मांगेंगे बेशक उसे गालियां निकालें या धूप जलाएं, कुछ भी करें जब उसकी दुकान पर हीरे हैं ही नहीं तो वह कहाँ से देगा?

हमारा गुरु के साथ परमार्थ का रिश्ता है। हमारी आत्मा को सचखण्ड पहुंचाना गुरु का परम धर्म है, गुरु अपनी ड्यूटी निभाते हैं। आप परमार्थ के लिए कुछ भी मांगे गुरु जरूर देगें, यह उनका बिरद है। गुरु साहब कहते हैं:

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कैं दुख।
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख।।

हम जीवों को तो मांगना भी नहीं आता कि हमने सन्तों से क्या मांगना है? हम जो चीज़ें मांगते हैं जब उनमें से दुख मिलता है तो फरियाद करते हैं कि ये चीजें हमें क्यों मिली?

मेरी चाची के लड़के की शादी नहीं हो रही थी, उसने काफी मन्नतें मांगी। चाची ने मुझसे कहा, जिस दिन तेरे गुरु बाबा बिशनदास जी आएँ तो मुझे बताना। अगर बाबा बिशनदास जी मेरी आशा पूरी कर दें तो मैं हर महीने उनके दर्शन करने जाया करूंगी। जब बाबा बिशनदास जी आए तो मैंने उन्हें बताया, चाची ने विनती की। बाबा बिशनदास जी ने हंसकर कहा, ''तेरे लड़के की शादी तो हो जाएगी, घर में बहू आ जाएगी। तू वादा करती है कि तू दर्शनों के लिए आया करेगी?'' तब चाची ने कहा, ''जरूर।'' बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''देखेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तू मेरे पीछे डंडा लेकर फिरे।''

चाची के लड़के की शादी हो गई, घर में बहू आ गई। मेरी चाची का स्वभाव बहुत सख्त था लेकिन वह नुक्स अपनी बहू में निकालती थीं। मैंने चाची से कहा कि मैं बाबा बिशनदास जी के दर्शनों के लिए जा रहा हूं, आप भी मेरे साथ उनके दर्शन करने चलें। चाची ने कहा, ''मैं उनके

दर्शन तब करूंगी जब ये दोनों ही मर जाएं।'' वह बाबा बिशनदास जी के आगे खड़ी होकर कहने लगी कि मैं आपकी करामात तब मानूंगी अगर ये दोनों मर जाएं। सोचकर देख लें, पहले हम चीजें मांगते है जब उनसे कोई तकलीफ आती है तो हम उसी ईष्ट में नुक्स निकालते है कि आपने हमारा यह काम नहीं किया।

पश्चिम से एक मेम आई वह बहुत अच्छी थी, भजन–अभ्यास करती थी। जब वह इंटरव्यू में आई तो उसने कहा, ''मेरा दिल करता है कि मैं काफी सारे बच्चे पैदा करूं।'' मैंने कहा, ''यह महाराज कृपाल का दरबार है वे सबकी आशा पूरी करते हैं।'' कुछ समय बाद उसके दो बच्चे हुए। आपको पता है कि दो बच्चे पालने बहुत मुश्किल होते हैं, मैं उसकी मुश्किल को भी जानता था। जब मैं टूर पर गया तो वह मुझसे मिली, दोनों बच्चे उसके पास थे, उसने एक बच्चा किसी और को पकड़ाया हुआ था। उसने मुझसे कहा, ''मैं बहुत दुखी हूं, कहीं फिर ऐसा न हो जाए।'' मेरे कहने का भाव है कि पहले जीव मांगता है, जब वह चीज़ उसे मिल जाती है तो उसे उस चीज़ से दुख होता है फिर भी यह फरियादें करता है।

प्यारेयो, सतगुरु अपने बच्चों को दोनों हाथों से दात देकर खुश होते है लेकिन हमें मांगना नहीं आता, हम दुनियावी चीज़ें मांगते हैं। सन्त–सतगुरु जानते हैं कि यह मेरे बच्चे के फायदे में है या नहीं। जब हम मांग कर रहे होते हैं तब वे जवाब भी दे रहे होते हैं लेकिन अफसोस! हम उन्हें तो सुनाते हैं, पर्दे के पीछे वे सुनते भी हैं पर वे जो जवाब देते हैं, हम अभी उसे सुनने के काबिल नहीं बने, अभी तक हम उनका जवाब नहीं सुन रहे।

प्यारेयो, सेवक के साथ बड़े–बड़े हादसे होते हैं अगर गुरु के पास एक सेकंड से पहले भी पहुंचने की चार्जिंग न हो तो गुरु सेवक की मदद किस तरह कर सकते हैं? हमारे पास ऐसे बहुत से पत्र आ जाते हैं जिनके बड़े–बड़े एक्सीडेंट हो जाते हैं, उन्हें कई–कई दिन होश नहीं आता लेकिन

फिर भी वे कहते हैं कि गुरु ने हमारी मदद की। कई प्रेमियों का ऑपरेशन होता है, वे बताते हैं कि गुरु ऑपरेशन के दौरान हमारे पास खड़े रहे। कई बीबीयों के बच्चे ऑपरेशन से होते हैं, वे गवाही देती हैं कि उतनी देर बाबा सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी और आप खड़े थे। उस वक्त गए, जब बच्चा पैदा हुआ। आपने बिल्कुल भी तकलीफ नहीं होने दी। आप देख सकते हैं, वह कौन–सी चीज़ है जो उन्हें वहां खड़ी दिखाई देती है। यह उनकी श्रद्धा और प्यार है। गुरु तो हमेशा ही सेवक के साथ है लेकिन उनके प्यार के कारण वे सामने आ गए।

एक बड़ी हंसने वाली दिलचस्प बात है। सेवक को करंट की जरूरत है अगर गुरु यह कहे कि मैं अपनी बैटरी चार्ज कर रहा हूं तो ऐसे गुरु से सेवक क्या फायदा उठाएगा? हमने ऐसे गुरु के पास जाना है जिनकी बैटरी हमेशा फुल हो, जिनके अंदर परमात्मा प्रकट हों। परमात्मा और उनमें कोई फर्क नहीं। अंधे गुरु के पास जाने से हमारा कोई फायदा नहीं होता लेकिन जब तक गुरु को पूरा शिष्य न मिले तब तक अंधे और सुजाखे का भी पता नहीं चलता।

मैं बचपन से इस तरफ लगा हुआ हूं, मैंने अठारह साल 'दो–शब्द' का अभ्यास किया। यह उस परमात्मा कृपाल की ही दया थी, उनकी मेहरबानी थी। वे भी इस खोज में थे, जब उन्होंने देखा कि दिल–दिमाग खाली है तो वे खुद ही दया करके आए। उन्होंने इस गरीब आत्मा के अंदर नाम का खजाना रख दिया। तकरीबन चार–पांच साल फिर अभ्यास किया। गुरु हमेशा सच्चे शिष्य की खोज में होते हैं। जिस तरह शिष्य को गुरु भाग्य से मिलते हैं उसी तरह गुरु को भी शिष्य भाग्य से ही मिलता है। मैंने एक भजन में बताया है:

लोकी कैंहंदे प्रेम सुखाला, ऐहदा झपट है शेरां वाला।
ऐह तां नाग जहरीला काला, थर थर रूह घबरांदी ऐ।

जो आत्माएं पवित्र होती हैं, उन्हें पता है कि जिस तरह शेर एक ही झपट में अपना शिकार कर लेता है। जहरीला नाग इंसान के पास मुंह करके कहता है कि मेरे ऊपर नहीं पीछे गिर। उसी तरह जब सच्चा शिष्य पूरे गुरु की सोहबत में आता है तो उस पर भी इसी तरह का असर होता है। गुरु उसे एक ही निगाह में अपना बना लेते हैं और शिष्य सदा के लिए उनका हो जाता है।

एक प्रेमी: *मैं एक बार फिर आपके सामने अपराधी बनकर खड़ा हो गया हूँ। जिस तरह कल रात आपने सतसंग में बताया था कि जो कुँवारी लड़की माँ बन जाती है, मैं भी अपने आपको उसी तरह महसूस कर रहा हूँ। जब मैं आपसे शारीरिक रूप से अलग हो गया तब मैंने धूम्रपान किया और शराब पी। मैंने सिर्फ आपसे बेवफ़ाई नहीं की बल्कि अपनी पत्नी से भी बेवफ़ाई की और हर किस्म के बुरे काम किए।*

मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ। मैं सन्तमत के नाम पर धब्बा हूँ और एक बार फिर से आपके चरणों में आकर आपसे क्षमा मांगता हूँ।

बाबा जी: प्यारे बेटा, सन्तों को तो परमात्मा ने क्षमा देकर ही भेजा होता है, सन्त क्षमा करना ही जानते हैं। बैठ जाएँ और आगे से ऐसा कोई कर्म न करें। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से प्रेमियों को संदेश

प्यार

1 जुलाई 1983 बुकारामांगा (कोलंबिया)

सब सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे अपनी आत्मिक खोज में एक ही मंजिल पर पहुंचे, सबका एक ही उपदेश है। सब महात्माओं ने हमें यह समझाया कि पश्चिम और पूर्व हम सबके परमात्मा एक हैं और वे हमारे शरीर, देह और वजूद में हैं। हम अंदर जाकर ही परमात्मा से मिल सकते हैं। हम किसी समाज या मुल्क की तब्दीली से या किसी भी रीति रिवाज से परमात्मा से नहीं मिल सकते। हम बच्चों का त्याग करके भी परमात्मा से नहीं मिल सकते। हम समाज और घर की जिम्मेदारियाँ पूरी करते हुए परमात्मा से मिल सकते हैं।

जिंदगी एक संघर्ष है, महात्मा हमें कायर या बुझदिल बनाने के लिए नहीं आते। वे हमें प्यार से समझाते हैं कि जो प्रालब्ध बन चुकी है उसे चाहे दुखी होकर भोगें या सुखी होकर भोगें लेकिन बहादुर बनकर दुख–सुख का मुकाबला करें।

इस **प्यार** की दुनिया में कदम रखने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार का त्याग करना और शाकाहारी होना बहुत जरूरी है क्योंकि परमात्मा ने इस धरती पर एक पशु–पक्षी को भी उतना ही रहने का हक दिया है जितना एक इंसान को दिया है। अपने स्वाद और अपनी अच्छी सेहत बनाने के लिए किसी की जान ले लेनी, इससे ज्यादा बेइंसाफी और क्या हो सकती है।

मैं जब आयुर्वेदिक का काम करता था तो मेरे पास काफी मरीज आया करते थे। दो ऐसे मरीज थे जिन्हें सिरसाम (मैलनकोलिया) हुआ था। सिरसाम एक ऐसी बीमारी है जिसमें सिर सुन्न हो जाता है और आदमी पागलों जैसी हरकतें करने लग जाता है। इस बीमारी को 'मालीखूल्या' भी

कहते हैं। यह बहुत भयानक बीमारी है, इस बीमारी से इंसान की सोचने की शक्ति भी खत्म हो जाती है। मैंने उनके घरवालों को सलाह दी कि मोठ की मोटी–सी रोटी एक तरफ से तवे पर सेककर इनके सिर पर बांध दें, ये ठीक हो जाएंगे। वहाँ एक डॉक्टर आया जो खुद मीट–शराब खाता–पीता था। वह कहने लगा कि आयुर्वेदिक इलाज ठीक नहीं है। आप ऐसा करें कि एक मुर्गा काटकर, ओखली में कूट कर और तल कर इसके सिर पर बाँधें तो यह ठीक हो जाएगा।

एक परिवार ने तो मेरी बात मानी लेकिन दूसरे परिवार ने नहीं मानी। मैंने कहा कि आप अपनी सेहत बचाने के लिए किसी की जान ले रहे हैं। क्या यह जानवर आपके लिए सुख मनाएगा, क्या परमात्मा आपको मेहर बख्शेंगे? यह बात उस इलाके में काफी मशहूर है कि जिसके सिर पर मुर्गा बांधा था, वह मर गया और जिसके सिर के ऊपर रोटी बांधी थी, वह बच गया।

हमें सन्त–महात्माओं ने यह भी बताया कि इंसानी जामा परमात्मा से मिलने के लिए सीढ़ी का आखिरी स्टेप है। परमात्मा की प्राप्ति मकान की छत पर या मंजिल पर पहुंचना है। हम मनुष्य जामे में अंदर जाकर ही परमात्मा से मिल सकते हैं। जब तक हम तीनों गुण – सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर नहीं जाते तब तक हमें सहज अवस्था या सहज समाधि प्राप्त नहीं होती।

तमोगुण क्रोध की आग को कहते हैं, यह हमें पागल बना देता है, हमें अपनी होश नहीं रहती। क्रोध हमसे पशुओं जैसे काम करवा लेता है। रजोगुण हमें माया की दलदल और कई किस्म के लोभ–लालच में फंसाता है। जब सतोगुण आता है तब हमारे दिल को सन्त–महात्माओं की सोहबत अच्छी लगती है और हम अच्छे काम करने लगते हैं। जब हम तीनों गुणों को पार करके पारब्रह्म में पहुंच जाते हैं तो सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है और सचखण्ड में जाकर मुकम्मल हो जाती है। गुरु साहब कहते हैं:

तृहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ।
पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुँढहु घुथा जाइ।
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ।

कोई गुरुमुख महात्मा मालिक का प्यारा मिल जाए तो वह हमें परमात्मा से मिला सकता है। हम अपनी मन बुद्धि से कभी भी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। अगर हम अपनी खोज या मेहनत से परमात्मा को प्राप्त कर सकते होते तो मुझे परमपिता कृपाल या बाबा बिशन दास जी के चरणों में जाने की जरूरत नहीं पड़ती।

हर एक महात्मा को पूरे सतगुरु के दर पर सिर झुकाना पड़ा बेशक वे कितने भी पढ़े लिखे या कितने भी समझदार क्यों नहीं थे। हम बेशक कितने भी दुनिया के जानकार हों फिर भी हम पग–पग पर भूलते हैं। हम इस दुनिया में भी अकेले सफर नहीं कर सकते तो रूहानियत के रास्ते पर तो हम बिल्कुल अनजान हैं, पांच साल के बच्चे जैसे हैं। जब तक हमें उन खतरों के जानकार, उन बवंडरों के वाकिफकार नहीं मिलें तब तक हम कभी भी अंदर अपना सफर तय नहीं कर सकते। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी भी बहुत छोटी है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार तो कोई खास कुर्बानी नहीं है और भी बहुत बड़ी कुर्बानियां हैं क्योंकि हमारी आत्मा के ऊपर पच्चीस प्रकृतियां और मन–माया के पर्दे हैं। कल पाठी जी ने भजन बोला था:

इस प्रेम दी दुनियां विच सजणा, नुकसान उठौणा पैंदा है।
पिच्छों प्रीतम प्यारा तां मिलदा,पहलां सिर कटवौणा पैंदा है।

प्यार हमें समुन्द्र, समुन्द्र की लहरों, पहाड़ों, जंगलों और बाजारों में से नहीं मिलता और प्यार खेतों में भी नहीं उगता। सन्त–महात्मा उस प्यार की, उस समुन्द्र की लहर होते हैं, वे इस संसार में प्यार देने के लिए ही आते हैं। वे पशु–पक्षी तक को भी प्यार करते हैं। महात्मा हमें प्यार के साथ रहना ही सिखाते हैं। प्रभु भक्ति में **प्यार** ही प्रकट होता है। प्यार तो सुच्चा

था, प्योर और पवित्र था लेकिन दुनिया ने इसके अंदर विषय–विकारों की मिलावट करके इस **प्यार** को गंदा और मैला कर दिया।

हमारे परमपिता कृपाल प्यार ही देने के लिए आए थे, उन्होंने **प्यार** ही सिखाया। उन्होंने हमें हमेशा बताया कि आओ भई, हम सब इकट्ठे होकर बैठें। हम सब एक बाप के बच्चे हैं। पूर्व या पश्चिम, हर मुल्क के इंसानों को प्यार का ही संदेश दिया। सन्तों की नजर आत्मा पर होती है, आत्मा उस **प्यार** की एक बूंद है और बुराई मन के अंदर है।

सन्त–महात्मा अपनी मर्जी से इस मंडल पर नहीं आते, उन्हें भेजा जाता है। उनकी सुरत हमेशा ही परमात्मा के चरणों में लगी रहती है। उनके ऊपर न तो इस संसार की अमीरी का कोई असर होता है और न ही गरीबी का कोई असर होता है। वे एक नमूना देने के लिए और हमारी आत्मा को सुख के धाम में पहुंचाने के लिए संसार में आते हैं।

हमारा फर्ज बनता है कि हम ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करें, मन की गुलामी से आजादी प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनाकर परमपिता कृपाल के दर पर हाज़री लगाएं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को गुफा दर्शनों के समय दिया हुआ संदेश

प्यार, भरोसा और श्रद्धा

05 जनवरी 1991 | 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

सन्तमत में कामयाब होने के लिए सतसंगी के दिल में हमेशा **प्यार, भरोसा और श्रद्धा** होनी चाहिए, तीनों का एक ही मक़सद है। सतसंगी को सिमरन, भजन और ध्यान ये तीनों अपने अंदर कायम रखने चाहिए। गरीब आदमी अमीर के सामने इसलिए हाथ फैलाता है कि यह मुझे कुछ न कुछ देगा, मेरी ज़रूरत पूरी करेगा।

प्यारेयो, यही हमारी हालत है, हमें अपनी पड़ताल करने से पता चलता है कि हम रूहानियत में दिवालियेपन पर आकर खड़े हुए हैं। हम रूहानियत में बिल्कुल कंगाल हैं तभी हम उस महान शक्ति के आगे फरियाद करते हैं कि आप हमारी सहायता करें, हमारी मदद करें।

इस जगह के बारे में आप सबने काफी कुछ सुना है और मैगज़ीन में भी छपा है। दुनियावी तौर पर यह जगह ज्यादा सुंदर नहीं, कोई खास अच्छी नहीं। आपको पता है कि यह जगह जंगल में है। यह वैसी ही रखी हुई है जैसी की महाराज परमपिता कृपाल के समय में थी। जब इस ग़रीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है, इसे पता चला कि मैं रूहानियत में कितना कंगाल हूँ, कितना कमज़ोर हूँ तो यह आत्मा दर–दर फिरी।

मैं सतसंग में बताया करता हूँ कि मैं उनकी याद में कितना फिरता रहा लेकिन जब बाहर फिरने से कुछ नहीं मिला फिर अपने आपको असहाय समझकर मैंने उन्हें पुकारना शुरू किया। परमपिता कृपाल ने छब्बीस साल बहुत प्यार से कहा, ''इंसान का बनना मुश्किल है, भगवान को प्राप्त करना मुश्किल नहीं। भगवान इंसान की तलाश में फिरते हैं।''

उन्होंने यह एक सच्चाई हमारे सामने रखी फिर वे कहा करते थे कि देने वाले का क्या कसूर है, सवाल तो लेने वाले का है। जैसा–जैसा किसी

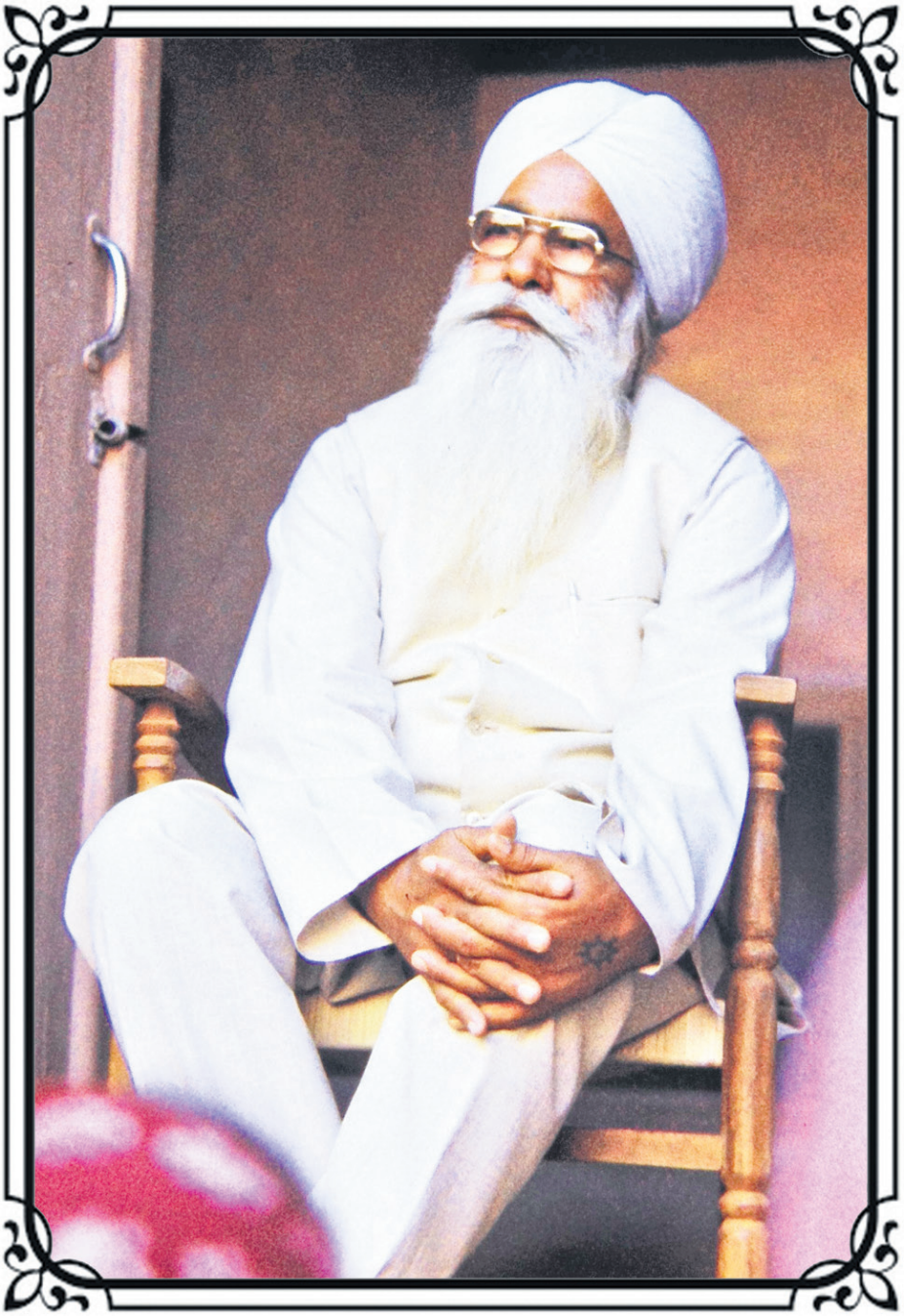

ने बर्तन बनाया होता है वे वैसा–वैसा ही दे जाते हैं। यह हमारी **श्रद्धा, प्यार और भरोसे** पर निर्भर करता है, हमने बर्तन बनाना है।

जैसे पहाड़ की चोटी पर बैठे हुए को सब दिख रहा होता है कि आग कहाँ लगी है, वहाँ उसकी मदद के लिए फौरन ऑक्सीजन पहुँच जाती है इसी तरह परमात्मा बेखबर नहीं हैं। जब उन्हें पता चला कि एक गरीब और कंगाल आत्मा मदद के लिए उन्हें पुकार रही है तो उनसे रहा नहीं गया, वे खुद ही आए।

इस जगह की यही महानता है कि जब इस कंगाल आत्मा को बाहर से कुछ नहीं मिला तो उन्होंने आकर रूहानियत का बेशुमार भंडार दिया जो बयान से बाहर है। वह भंडार पैसों से, ज़ोर–ज़बरदस्ती से या किसी वेश धारण करने से नहीं मिलता। यह उनकी दया ही थी कि उन्होंने इस ग़रीब, कंगाल आत्मा पर अपनी मेहर की।

उन्होंने हमें बहुत प्यार से बताया कि बेटा, आपका सफ़र पैरों के तले से लेकर सिर की चोटी तक है। आप तीसरे तिल तक सिमरन की सहायता से पहुँच सकते हैं। तीसरे तिल से ऊपर का सफ़र, ऊपर की मंज़िलें आत्मा शब्द पर सवार होकर तय करती है लेकिन जब तक हम सिमरन की मदद से तीसरे तिल पर नहीं पहुँचते तब तक हमारी आत्मा को 'शब्द' नहीं खींचता बेशक सुनाई दे रहा है, हम अपना ऊपर का सफ़र तय नहीं कर सकते। जिस तरह लोहा मैगनेट की रेंज से दूर पड़ा है, वह खींचता नहीं इसी तरह 'शब्द' का काम है।

बेशक पहले–पहले हम सिमरन की महानता को नहीं समझते, हमें खुश्क सा लगता है। हमें थोड़ा–सा संघर्ष करना पड़ता है लेकिन जब हम संघर्ष में कामयाब हो जाते हैं तो सिमरन में रस आने लगता है, चार्जिंग मिलने लग जाती है फिर सिमरन के फायदे का पता चलता है। यही बात भरोसे की है, पहले–पहले हमारा मन बीच में दखल देता रहता है। कभी

हम गुरु को इंसान समझते हैं, कभी कम पढ़ा–लिखा समझते हैं, कभी बुद्धिमान समझ बैठते हैं। कभी बैठे–बैठे भरोसा बन गया, कभी टूट गया। सेवक के अंदर ऐसा संघर्ष चलता ही रहता है लेकिन जब थोड़ा–सा संघर्ष करते रहते हैं आखिर एक दिन हम कामयाब हो जाते हैं। जब भरोसा बन जाता है फिर सपने में भी याद नहीं आता कि मेरा गुरु इंसान है। यह ज़रूर है कि इंसानी जामे में वे महान सतपुरुष छुपे हुए हैं जो शब्द–रूप होकर कण–कण में व्यापक हैं। जब भरोसा बन जाता है, एक बार अंदर जाकर देख लेते हैं फिर ये नहीं टूटता। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

धरी देह मनुख की गुरु ने, जो तेरा करे कल्याण।

वे इंसान अपने आप नहीं बने, वे कर्मों की कैद में नहीं हैं, उन्हें प्रभु ने हमारी मदद के लिए भेजा है। वे अपने शिष्यों का कल्याण करने के लिए ही आते हैं जिनका सचखण्ड में फैसला हो चुका है कि अब इन्हें इस दुखी दुनिया में नहीं भेजना। यही बात प्यार पर लागू होती है अगर हमारे अंदर गुरु का प्यार जाग गया है तो विषय–विकारों से बचने का यह सबसे उत्तम साधन है क्योंकि दुनिया में गुरु जैसा कोई और सुंदर नहीं लगता, कोई अच्छा नहीं लगता। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जा, गुरु सतगुरु देहां।

मैंने कई बार पहले भी सतसंग में यह छोटी–सी कहानी अर्ज की है, आज फिर कर देता हूँ जो मैंने परमपिता कृपाल से सुनी है। महाराज सावन सिंह जी का बत्तीस साल का लड़का ओवरसियर लगा हुआ था। उसका अंत समय ब्यास स्टेशन पर ही हुआ। वे करन–कारन थे। वे अपने लड़के को इस डर से डेरे लेकर नहीं गए कि वहाँ बीबी रुक्को बाबा जयमल सिंह जी से कहेंगी कि आप इसे ज़िंदा करें।

सन्त कुदरत के कानून के खिलाफ भूलकर भी नहीं जाते, वे तो अपने सेवकों से भी यही कहते हैं कि मुसीबत झेल लें लेकिन कोई करामात न

दिखाएं इससे गुरूमुखता में बहुत फर्क पड़ जाता है। उन्होंने अपने लड़के के श्वास स्टेशन पर ही पूरे करवाए। वे कहा करते थे कि मैंने उस वक्त अपने दिल को टटोलकर देखा था, न गम था, न कोई खुशी थी। यह बाबा जयमल सिंह जी की दया–मेहर थी कि जो मैं भाणा मान सका।

जब महाराज सावन सिंह जी बाबा जयमल सिंह जी के गाँव सतसंग करने गए तो सबसे पहले जहाँ से उनके गाँव की हद आ गई, वे कार से उतरे और लेटकर दंडवत प्रणाम किया। जब सतसंग में बैठे तो सतसंग न कर सके, बहुत ऊंचा–ऊंचा रोने लगे। महाराज कृपाल ने कहा, ''महाराज जी, यह हालत आपकी है तो हम जीवों की क्या हालत होगी?'' उन्होंने थोड़ा–सा दिल थामकर कहा, ''अगर आज बाबा जयमल सिंह जी मेरी आँखों के सामने आ जाएँ तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

अब आप देख सकते हैं कि इतना बड़ा दुनियावी नुकसान हुआ तब उन्होंने कुछ महसूस नहीं किया लेकिन गुरु के बिछोड़े ने इतना व्याकुल कर दिया। अभी भी वे कहते हैं, ''अगर मेरे गुरु मुझे देह रूप में मिल जाएँ तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

मैं आशा करता हूँ कि आप जो श्रद्धा और प्यार बनाकर दस दिन के लिए यहाँ आए हैं, आपको यहां से जो प्रेरणा मिली है उसे अपने देश, अपने घर जाकर दुनिया की ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए कायम रखेंगे।

महान प्रभु परमात्मा कृपाल ने यहाँ कई बार अपने मुबारक चरण डाले हैं। कई प्रेमी जिनका 'शब्द' बंद होता है अगर वे श्रद्धा से नीचे गुफा में जाते हैं, बाद में जब वे कभी मिलते हैं तो ज़रूर बताते हैं कि हमारा शब्द खुल गया। मैं आशा करता हूँ कि आप अपनी श्रद्धा और प्यार से सिमरन करते हुए गुफा में जाएं और सिमरन करते हुए ही आएं।

***

धन्य अजायब

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध-संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से मुम्बई में 8 से 12 जनवरी 2025 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुंचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई-400 067

मोबाइल 9833004000

RNI No - RAJHIN/2003/9899